
Under CSR Support by
ipca | Foundation
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER
ARJUN BATCH
CLASS 12th | HISTORY
राजा, किसान और नगर
Chapter-2 | Part-9
आरंभिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएँ (लगभग 600 ई.पू. से 600 ई.)

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

# आज क्या पढेंगे ?

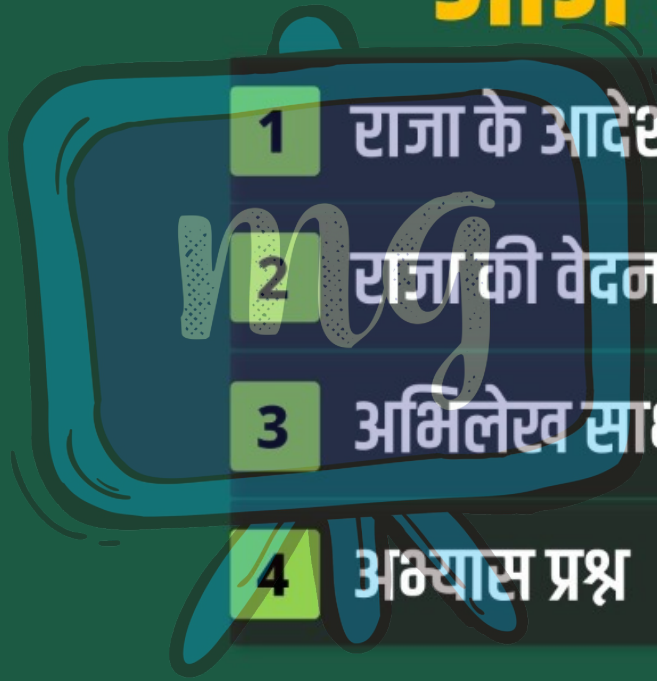

1. राजा के आदेश
2. राजा की वेदना
3. अभिलेख साक्ष्य की सीमा
4. अभ्यास प्रश्न

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



अशोक

## राजा के आदेश

राजन् देवानांपिय पियदस्सी यह कहते हैं: अतीत में मसलों को निपटाने और नियमित रूप से सूचना एकत्र करने की व्यवस्थएँ नहीं थीं। लेकिन मैंने निम्नलिखित (व्यवस्था) की हैं।

लोगों के समाचार हम तक प्रतिवेदक सदैव पहुँचाएँ। चाहे मैं कहीं भी हूँ, खाना खा रहा हूँ, अन्तःपुर में हूँ, विश्राम कक्ष में हूँ, गोशाले में हूँ, या फिर पालकी में मुझे ले जाया जा रहा हो अथवा वाटिका में हूँ। मैं लोगों के विषयों का निराकरण हर स्थल पर करूँगा।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

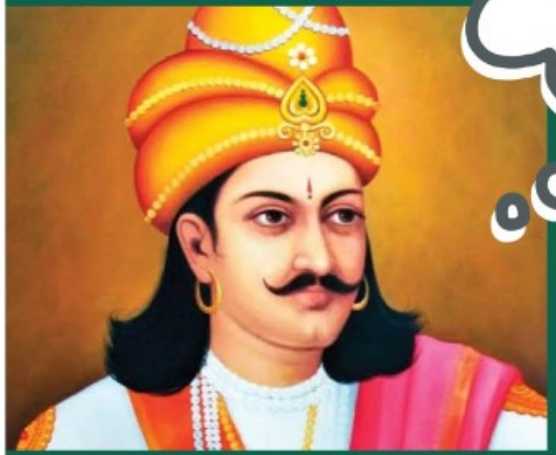


- इस अभिलेख में असोक का नाम नहीं लिखा है।
- इसमें असोक द्वारा अपनाई गई उपाधियों का प्रयोग किया गया है जैसे कि देवानांपिय अर्थात् देवताओं का प्रिय और 'पियदस्सी' यानी 'देखने में सुन्दर'।
- असोक नाम अन्य अभिलेखों में मिलता है जिसमें उनकी उपाधियाँ भी लिखी हैं।
- इन अभिलेखों का परीक्षण करने के बाद अभिलेखशास्त्रियों ने पता लगाया कि उनके विषय, शैली, भाषा और पुरालिपिविज्ञान सबमें समानता है, अतः ये अभिलेख एक ही शासक ने बनवाया होंगे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

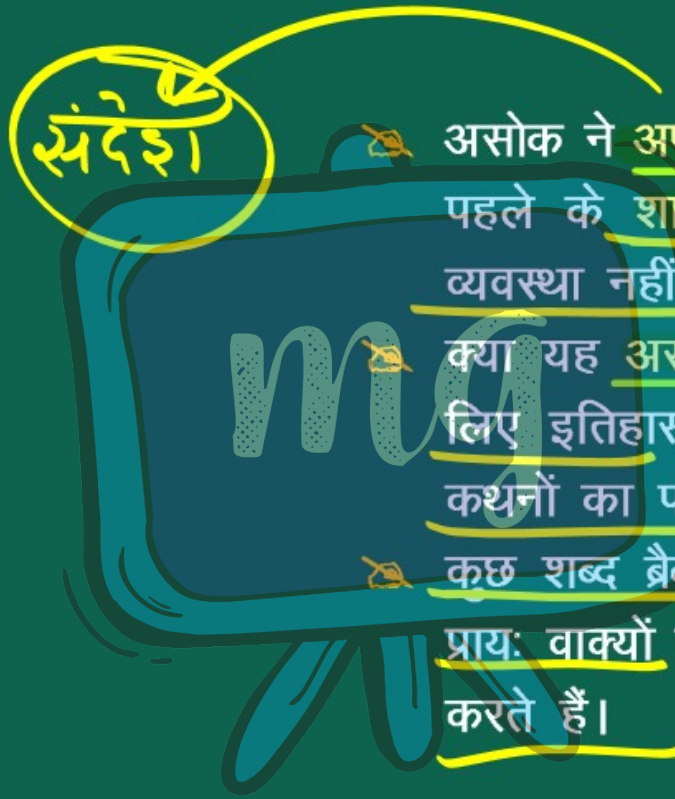


- असोक ने अपने अभिलेखों में कहा है कि उनसे पहले के शासकों ने रिपोर्ट एकत्र करने की व्यवस्था नहीं की थी।
- क्या यह असोक का वक्तव्य सही है? इसके लिए इतिहासकारों को बार–बार अभिलेखों के कथनों का परीक्षण करना पड़ता है।
- कुछ शब्द ब्रैकेट में लिखे हैं? अभिलेख शास्त्री प्रायः वाक्यों के अर्थ स्पष्ट करने के लिए ऐसा करते हैं।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



- इतिहासकार इस प्रकार परीक्षण करते हैं कि यदि राजा के आदेश यातायात मार्गों के किनारे और नगरों के पास प्राकृतिक पत्थरों पर उत्कीर्ण थे, तो क्या वहाँ से आने–जाने वाले लोग उन्हें पढ़ने के लिए रुकते थे?
- अधिकांश लोग प्रायः पढ़े–लिखे नहीं थे।
- क्या पाटलिपुत्र में प्रयुक्त प्राकृत उपमहाद्वीप में सभी स्थानों के लोग समझते थे?
- क्या राजा के आदेशों का पालन किया जाता था?
- इन प्रश्नों के उत्तर पाना सदैव कठिन हैं।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

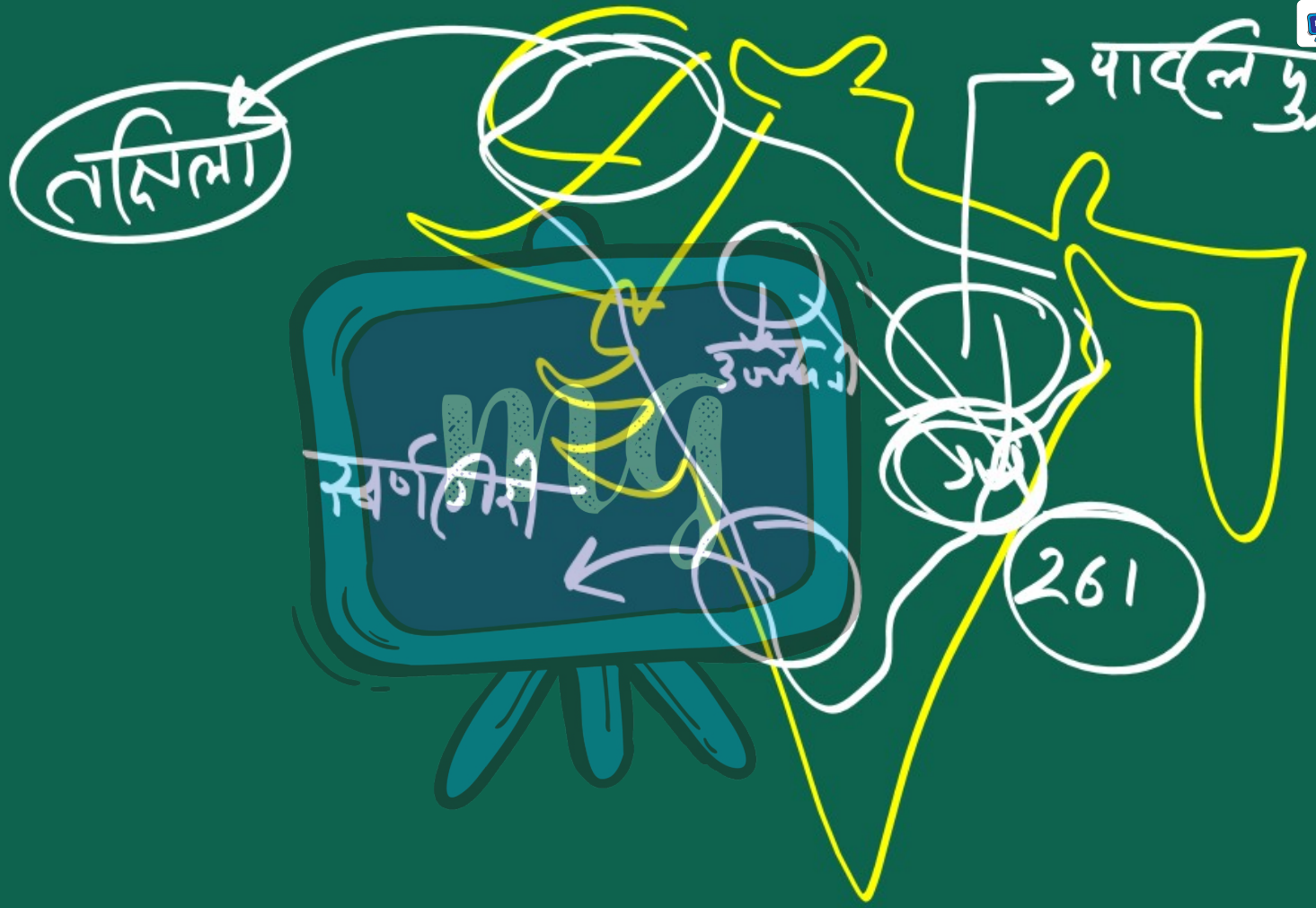

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

# राजा की वेदना



जब देवानांपिय पियदस्सी ने अपने शासन के आठ वर्ष पूरे किए तो उन्होंने कलिंग (आधुनिक तटवर्ती उड़ीसा) पर विजय प्राप्त की।

डेढ़ लाख पुरुषों को निष्कासित किया गया, एक लाख मारे गए और इससे भी ज्यादा की मृत्यु हुई।

कलिंग पर शासन स्थापित करने के बाद देवानांपिय धम्म के गहन अध्ययन, धम्म के स्नेह और धम्म के उपदेश में डूब गए हैं।

यही देवानांपिय के लिए कलिंग की विजय का पश्चाताप है।

देवानांपिय वेफ लिए यह बहुत वेदनादायी और निंदनीय है कि जब कोई किसी राज्य पर विजय प्राप्त करता है तो पराजित राज्य का हनन होता है, वहाँ लोग मारे जाते हैं, निष्कासित किए जाते हैं।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



- इस अभिलेख की व्याख्या प्रायः असोक की वेदना के प्रतिबिंब के रूप में की जाती है। साथ ही यह युद्ध के प्रति उनकी मनोवृत्ति में परिवर्तन को भी दर्शाता है।
- यद्यपि असोक के अभिलेख आधुनिक उड़ीसा में मिले हैं लेकिन उनकी वेदना को परिलक्षित करने वाला अभिलेख वहाँ नहीं मिला है अर्थात् यह अभिलेख उस क्षेत्र में नहीं उपलब्ध है जिस पर विजय प्राप्त की गई थी।
- राजा की नव विजय की वेदना उस क्षेत्र के लिए इतनी दर्दनाक थी कि राजा इस मुद्दे पर कुछ कह न सका।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

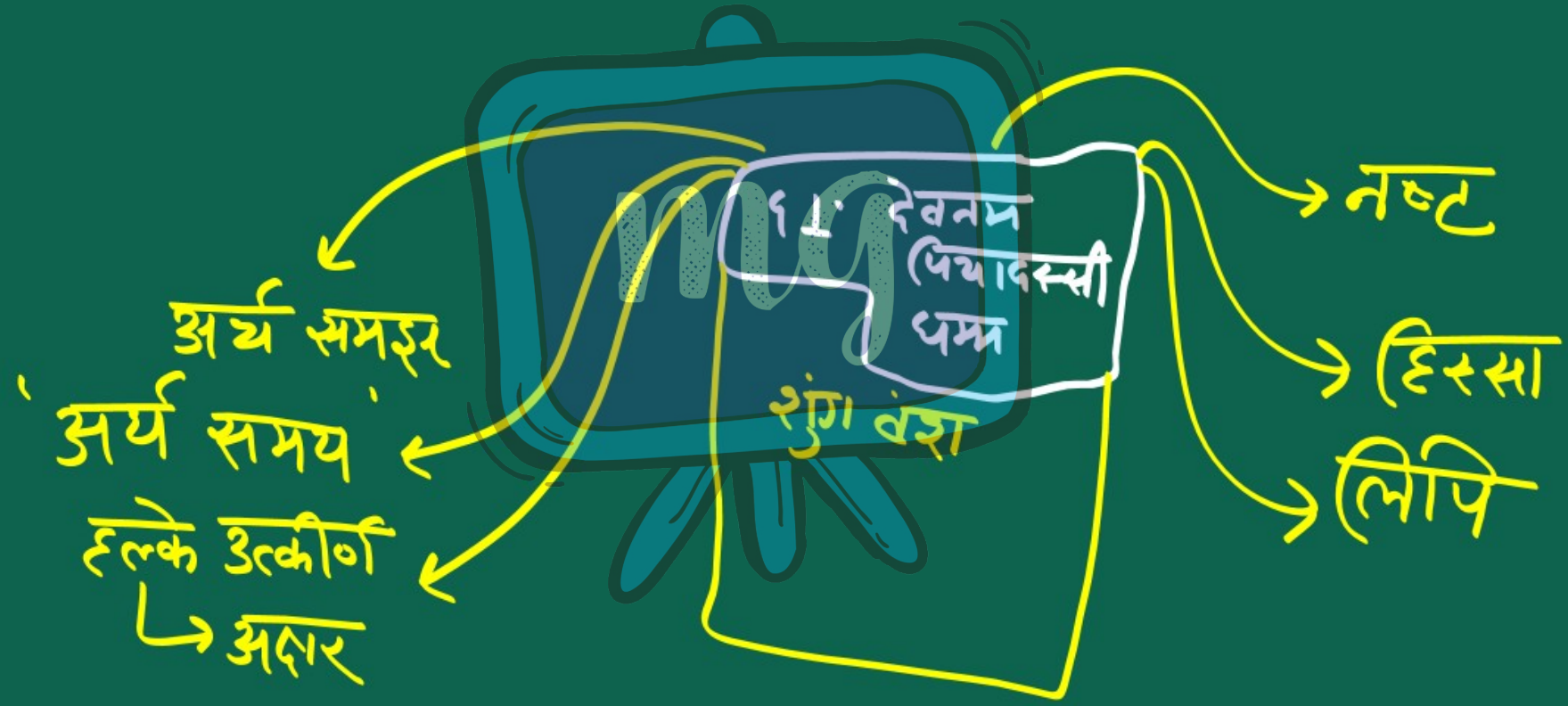

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

# अभिलेख साक्ष्य की सीमा



- अभिलेखों से प्राप्त जानकारी की भी सीमा होती है।
- कभी–कभी इसकी तकनीकी सीमा होती है। अक्षरों को हलके ढंग से उत्कीर्ण किया जाता है जिन्हें पढ़ पाना मुश्किल होता है।
- अभिलेख नष्ट भी हो सकते हैं जिनसे अक्षर लुप्त हो जाते हैं।
- अभिलेखों के शब्दों के वास्तविक अर्थ के बारे में पूर्ण रूप से ज्ञान हो पाना सदैव सरल नहीं होता क्योंकि कुछ अर्थ किसी विशेष स्थान या समय से संबंधित होते हैं।

- अक्षरों को हल्के ढंग से उत्कीर्ण
- नष्ट ⟶ लुप्त
- अर्थ की अस्पष्टता

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- अभिलेखों के अंश
- विशेष अवसरों
- राजनीतिक - सामाजिक इतिहास का अभाव

- यद्यपि कई हजार अभिलेख प्राप्त हुए हैं लेकिन सभी के अर्थ नहीं निकाले जा सके है।
- इसके अतिरिक्त और अनेक अभिलेख रहे होंगे जो कालांतर में सुरक्षित नहीं बचे हैं। इसलिए जो अभिलेख अभी उपलब्ध हैं, वह संभवतः कुल अभिलेखों के अंश मात्र हैं।
- एक मौलिक समस्या और भी है यह अभिलेख बड़े और विशेष अवसरों का ही उल्लेख करते हैं। यह जरूरी नहीं है कि जिन्हें हम आज राजनीतिक और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण मानते हैं उन्हें अभिलेखों में अंकित किया गया हो।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

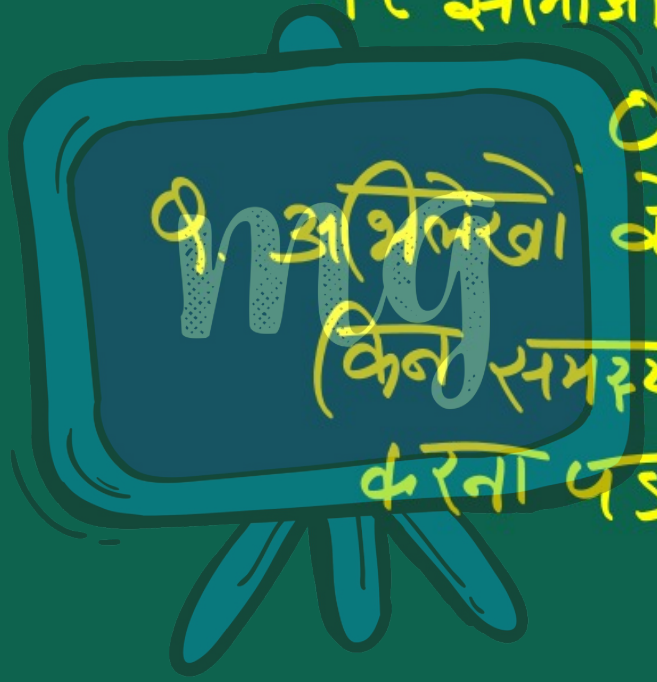

Q. अभिलेखों की साक्ष्यों के तौर पर सीमाओं का उल्लेख करें?

mg

या

Q. अभिलेखों को समझने में किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है?

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER




उदाहरण के तौर पर – खेती की दैनिक प्रक्रियाएं और रोजमर्रा की जिन्दगी के सुख दुख का उल्लेख अभिलेखों में नहीं है।

- इसके अलावा अभिलेख हमेशा उन्हीं व्यक्तियों के विचार व्यक्त करते हैं जो उन्हें बनवाते थे।
- अर्थात् राजनीतिक और आर्थिक इतिहास का पूर्ण ज्ञान मात्र अभिलेख शास्त्र से ही नहीं मिलता है।
- 19वीं सदी के आखिरी दशकों में और 20वीं सदी के प्रारंभ में इतिहासकार प्रमुख रूप से राजाओं के इतिहास में रुचि रखते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

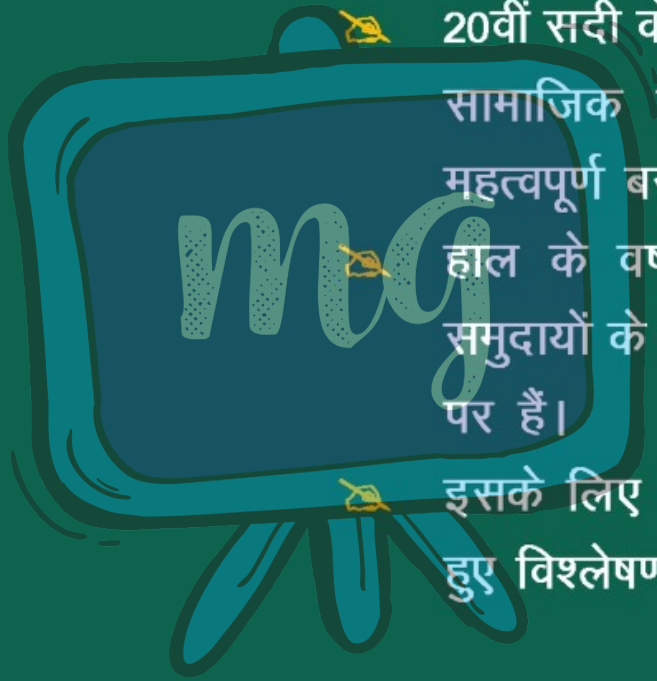

- 20वीं सदी के मध्य से आर्थिक परिवर्तन, विभिन्न सामाजिक समुदायों के उदय के विषय में महत्वपूर्ण बन गए।
- हाल के वर्षों में इतिहासकारों की रुचि ऐसे समुदायों के प्रति बढ़ी है जो सामाजिक हाशिये पर हैं।
- इसके लिए प्राचीन स्त्रोतों पर पुर्नविचार करते हुए विश्लेषण की गयी विधियां विकसित होंगी।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

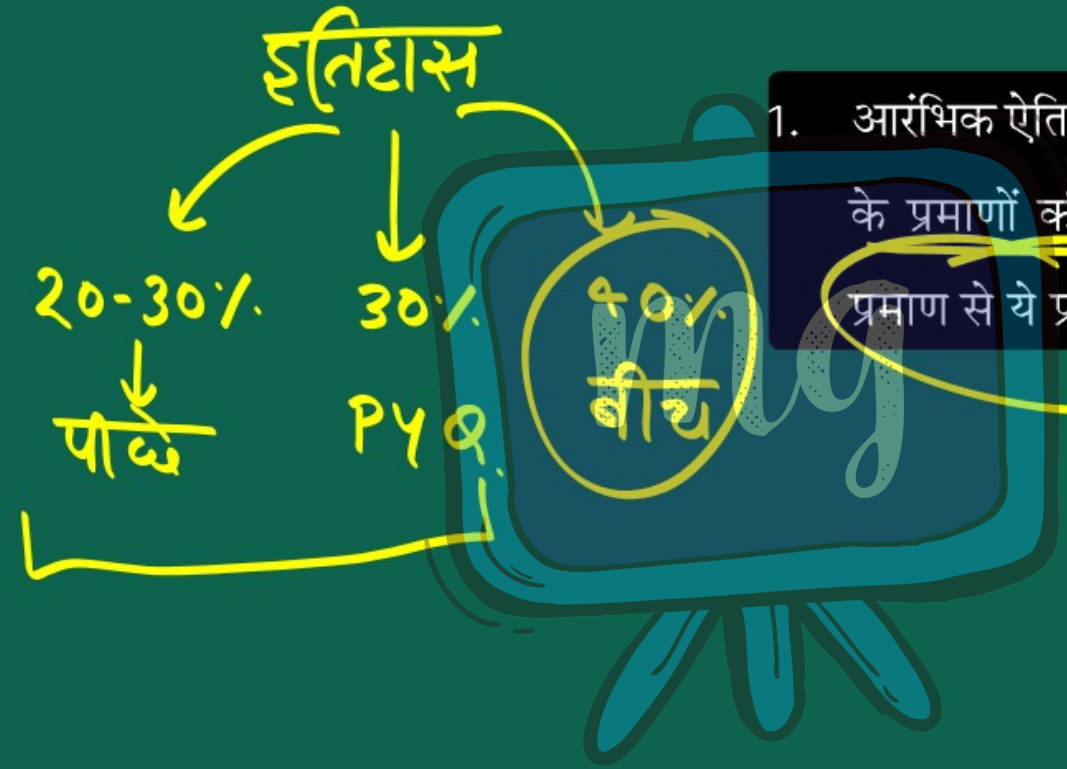


1. आरंभिक ऐतिहासिक नगरों में शिल्प कला के उत्पादन के प्रमाणों की चर्चा कीजिए। हड़प्पा के नगरों के प्रमाण से ये प्रमाण कितने भिन्न हैं ?

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER




उत्तर : आंरभिक ऐतिहासिक नगरों में शिल्प कला के उत्पादन के प्रमाण –

1. आरंभिक ऐतिहासिक नगरों में उत्कृष्ट श्रेणी के मिट्टी के कटोरे व थालियां मिली हैं, जिन पर चमकदार कलई चढी है। इन्हें उत्तरी कृष्ण मार्जित पात्र कहा जाता है इनका प्रयोग धनी लोग करते होंगे।
2. इन नगरों से सोने, चांदी, काँस्य, ताँबे, हाथी दांत, शीशे जैसे तरह तरह के पदार्थों के गहने, उपकरण, हथियार, बर्तन, सीप और पक्की मिट्टी मिली है।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

3. दानात्मक अभिलेखों से ज्ञात होता है कि इन नगरों में बुनकर, लिपिक, बढ़ई, कुम्हार, स्वर्णकार, लौहकार आदि शिल्पकार रहते थे।

4. नगरों में उत्पादकों एवं व्यापारियों के संघ बने हुए थे जिन्हें श्रेणी कहा जाता था। ये श्रेणियां पहले कच्चा माल खरीदती थी फिर उनका सामान तैयार कर बाजारों मे बेच देती थी।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

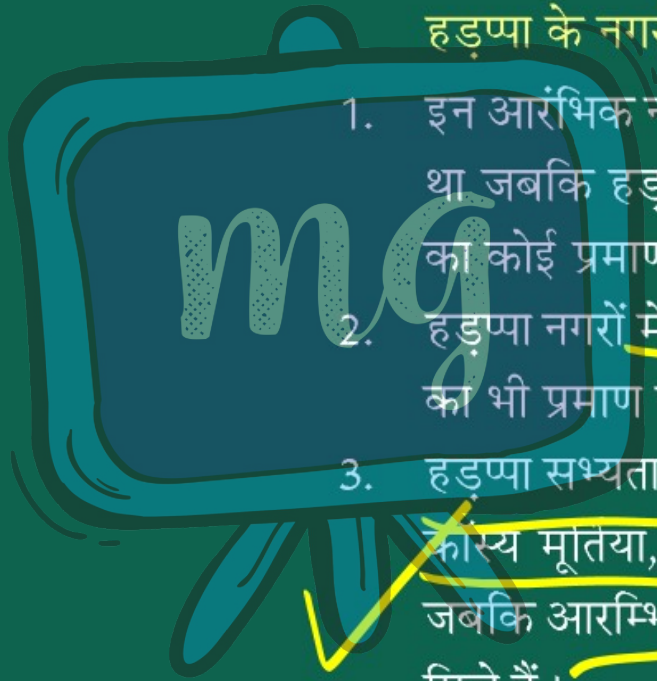

हड़प्पा के नगरों से भिन्नता :-

1. इन आरंभिक नगरों मे लौह उपकरणों का प्रयोग होता था जबकि हड़प्पा के नगरों में लौह-धातु के प्रयोग का कोई प्रमाण नहीं मिला है।
2. हड़प्पा नगरों में व्यापारियों के कोई संघ या श्रेणी होने का भी प्रमाण नहीं मिला है।
3. हड़प्पा सभ्यता से मनके बनाने, मातृदेवी की मूर्तियां, काँस्य मूर्तिया, मुहरे बनाने के शिल्प विकसित थे। जबकि आरम्भिक ऐतिहासिक नगरों में ये प्रमाण नहीं मिले हैं।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

2. महाजनपदों के विशिष्ट अभिलक्षणों का वर्णन कीजिए।

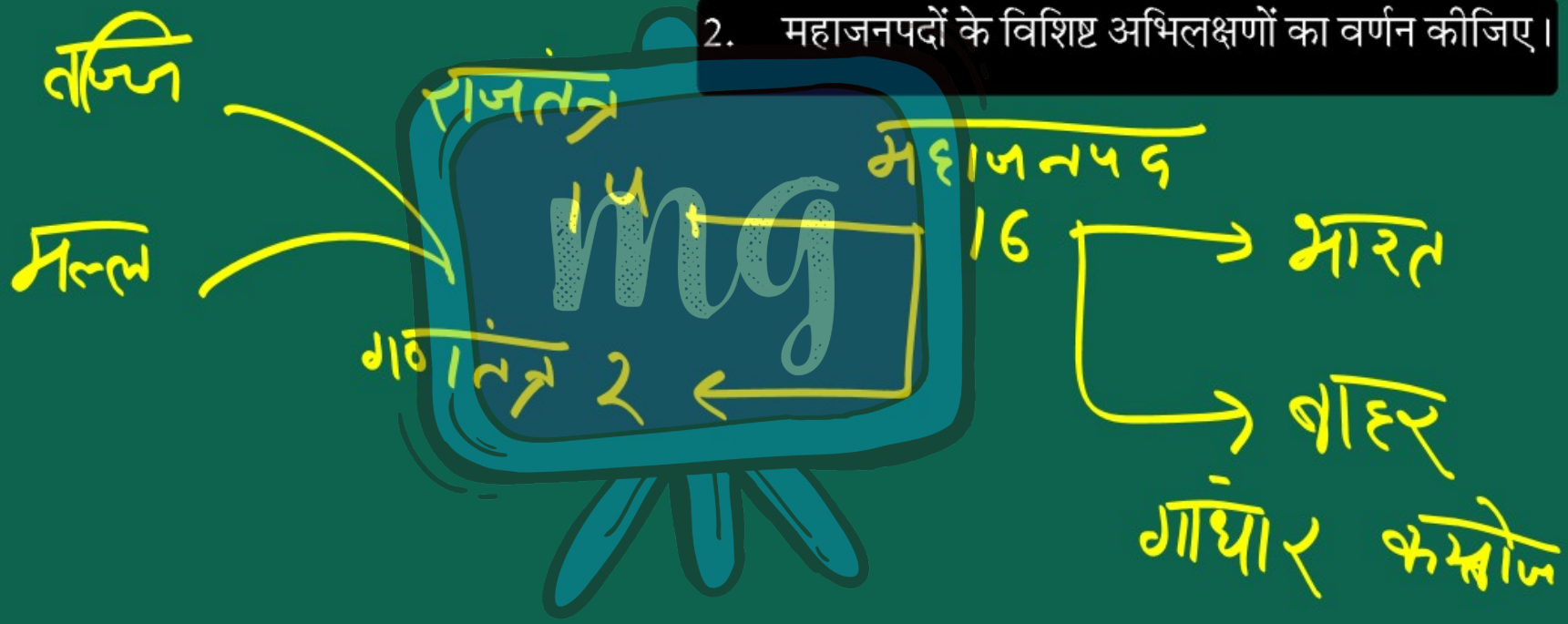

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

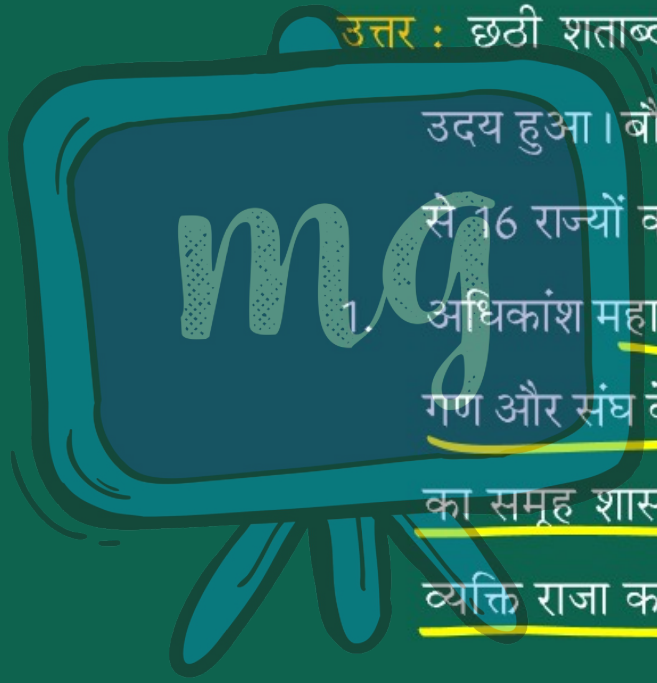

**उत्तर :** छठी शताब्दी ई. पू. में अनेक महाजनपदों का उदय हुआ। बौद्ध और जैन ग्रंथों में महाजनपद नाम से 16 राज्यों का उल्लेख मिलता है।

1. अधिकांश महाजनपदों में राजा का शासन था जबकि गण और संघ के नाम से प्रसिद्ध राज्यों में कई लोगों का समूह शासन करता था। इस समूह का प्रत्येक व्यक्ति राजा कहलाता था।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

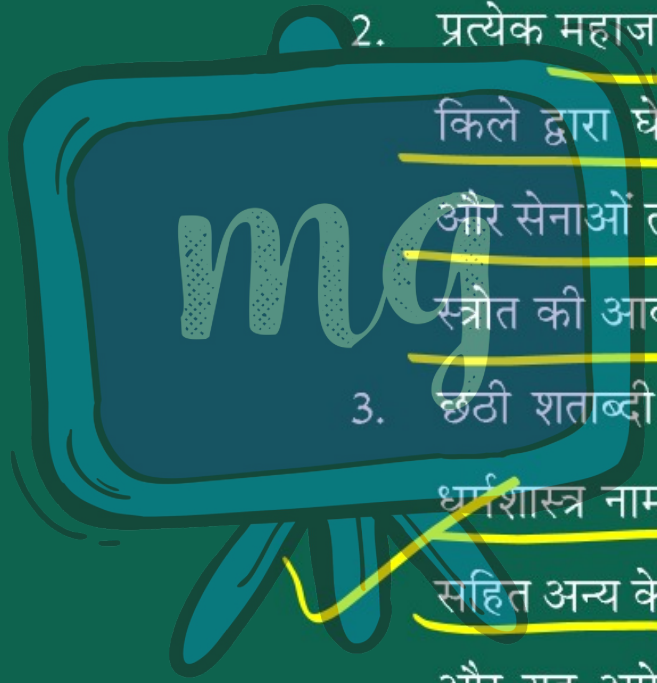

2. प्रत्येक महाजनपद की एक राजधानी होती थी जिसे किले द्वारा घेरा जाता था। किलेबन्द राजधानियों और सेनाओं तथा नौकरशाही के लिए भारी आर्थिक स्त्रोत की आवश्यकता थी।
3. छठी शताब्दी ईसा पूर्व में संस्कृत में ब्राह्मणों ने धर्मशास्त्र नामक ग्रंथों की रचना की इनमें शासक सहित अन्य के लिए नियमों का निर्धारण किया गया और यह अपेक्षा की जाती थी कि शासक क्षत्रिय वर्ग के ही हो।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

4. किसानों व्यापारियों और शिल्पकारों से कर तथा भेंट वसूलना शासक का अधिकार था।
5. पड़ोसी राज्य पर आक्रमण कर धन वसूलना भी वैद्य माना गया।
6. धीरे धीरे कुछ राज्यों में अपनी स्थाई सेना तथा नौकरशाही तंत्र संगठित कर लिये थे।
7. ये कुल 16 थे पर वज्जि, मगध, कौशल, कुरू, पांचाल, गांधार और अवन्ति प्रमुख थे।
8. इनका काल आरंभिक राज्यों, नगरों, लोहे के बढ़ते प्रयोग तथा सिक्कों के विकास के साथ जोड़ा जाता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

3. सामान्य लोगों के जीवन का पुर्ननिर्माण इतिहासकार कैसे करते हैं ?



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

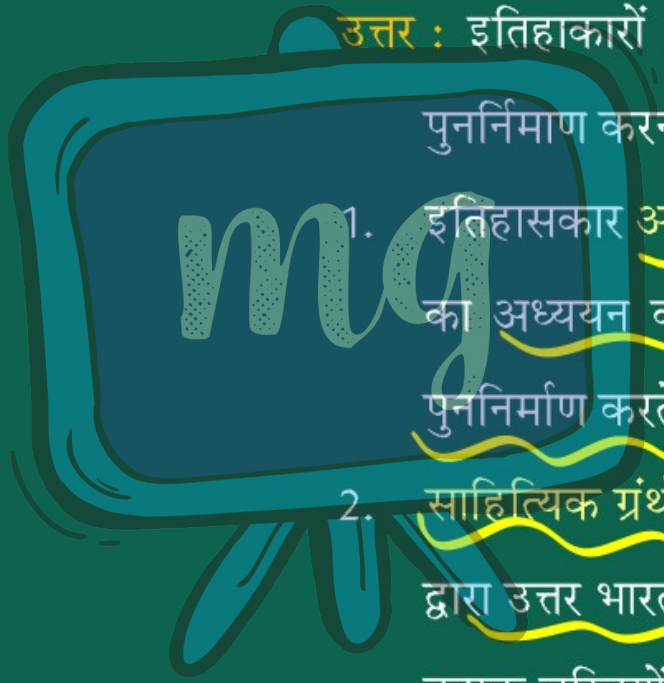

उत्तर : इतिहाकारों द्वारा सामान्य लोगों के जीवन का पुनर्निमाण करना –

1. इतिहासकार अभिलेखों, सिक्कों, चित्रों आदि स्त्रोतों का अध्ययन करके सामान्य लोगों के जीवन का पुनर्निर्माण करते हैं।
2. साहित्यिक ग्रंथों से भी पता लगाते हैं जैसे ग्रंथों के द्वारा उत्तर भारत, दक्कन पठार क्षेत्र और कर्नाटक में कृषक बस्तियों के तथा दक्कन एवं दक्षिण भारत में चरवाहा बस्तियों के स्थापित होने का पता लगा।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

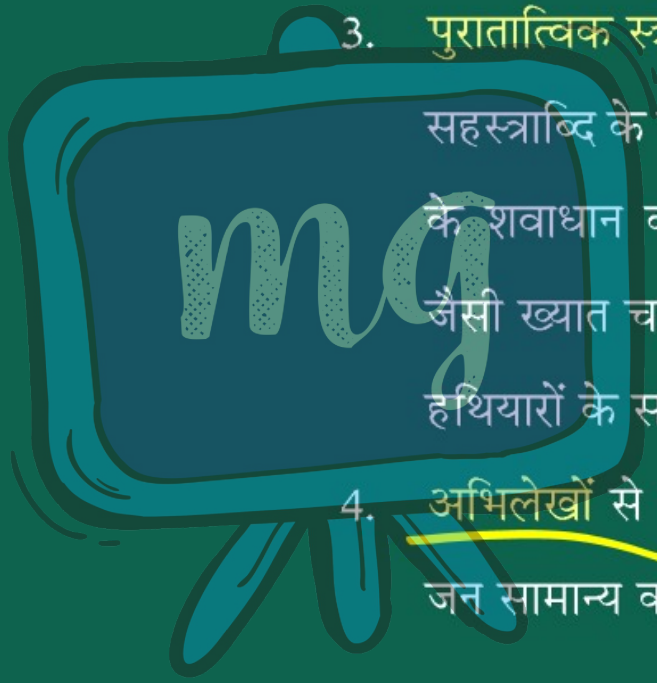

3. पुरातात्विक स्त्रोतों से पता लगा कि ईसा पूर्व पहली सहस्त्राब्दि के दौरान मध्य तथा दक्षिण भारत में शवों के शवाधान का तरीका बदल गया था महापाषाण जैसी ख्यात चट्टानों के ढांचों में लोहे के उपकरण व हथियारों के साथ शवाधान होता था।
4. अभिलेखों से यह भी पता चला है कि प्राकृत भाषा जन सामान्य की भाषा थी।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

5. जातक कथाओं से पता लगा कि राजा तथा ग्रामीण प्रजा के बीच संबंध तनावपूर्ण थे। शासक अपनी प्रजा पर भारी कर लगाते थे जिससे लोग बचने के लिए जंगलों में भाग जाते थे।
6. किसानों ने उपज बढ़ाने के लिए लोहे के फाल वाले हलों का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया था तथा सिंचाई के लिए कुंओं, तालाबों और नहरों का प्रयोग करते थे।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

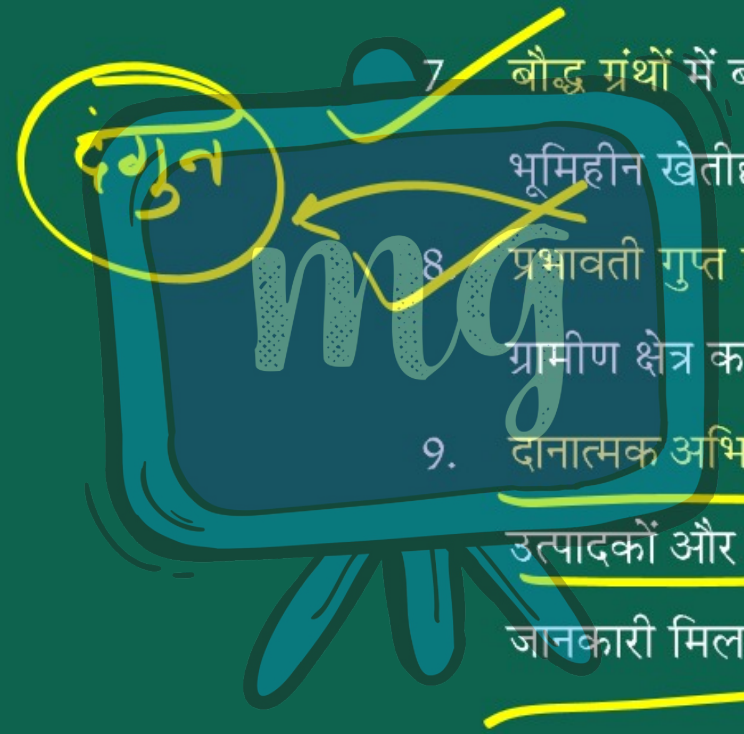


7. बौद्ध ग्रंथों में बड़े-बड़े जमींदारों, छोटे किसानों तथा भूमिहीन खेतीहर श्रमिकों का उल्लेख मिला है।
8. प्रभावती गुप्त के अभिलेख से भी ग्रामीण प्रजा एवं ग्रामीण क्षेत्र का पता चलता है।
9. दानात्मक अभिलेख से नगरों में रहने वाले शिल्पकारों, उत्पादकों और व्यापारियों के संघों (श्रेणी) के बारे में जानकारी मिलती है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

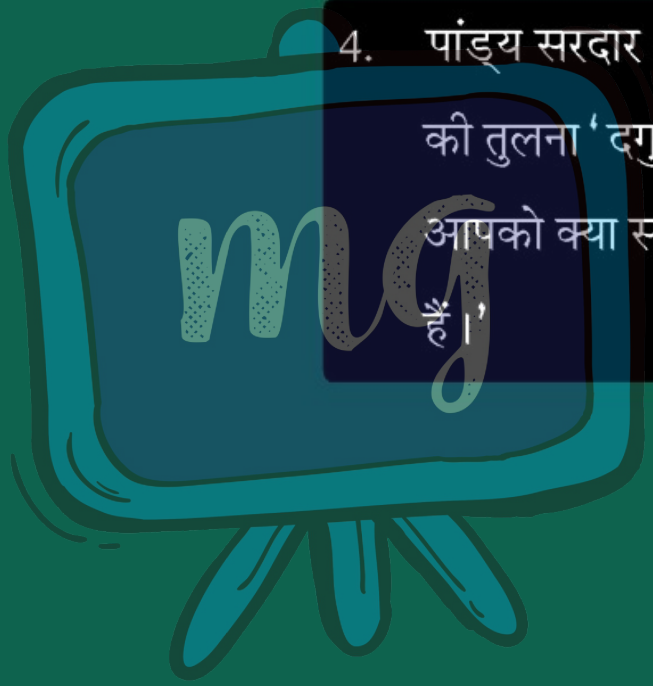

4. पांड्य सरदार (स्त्रोत-3) को दी जाने वाली वस्तुओं की तुलना 'दगुन की वस्तुओं (स्त्रोत-8) से कीजिए। आपको क्या समानताऐं और असमानताऐं दिखाई देती हैं।'

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : पांड्य सरदार को दी जाने वाली वस्तुऐं – हाथी दांत, सुगन्धित लकड़ी, हिरणों के बाल से बने चंवर, मधु, चंदन, गेरू, सुरमा, हल्दी, इलाचयी, मिर्च थी। इसके अलावा नारियल, आम, जड़ी बूटी, फल, प्याज, गन्ना, फूल, सुपारी, केला, बाघों के बच्चे, शेर, हाथी, बंदर, भालू, हिरण, कस्तूरी मृग, लोमड़ी, मोर, जंगली मुर्गे, बोलने वाले तोते थे।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

दंगुन गांव की वस्तुऐं : घास, आसन में प्रयुक्त होने वाले जानवरों की खाल, कोयला, मदिरा, नमक, खनिज पदार्थ, खदिर वृक्ष, फूल, दूध आदि थी।

समानताऐं :-

1. लोगों द्वारा अपने सरदारों के समय समय पर अनेक वस्तुऐं भेंट में प्रदान की जाती है।
2. स्थानीय स्तर पर पाई जाने वाली वस्तुओं को भेंट करते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

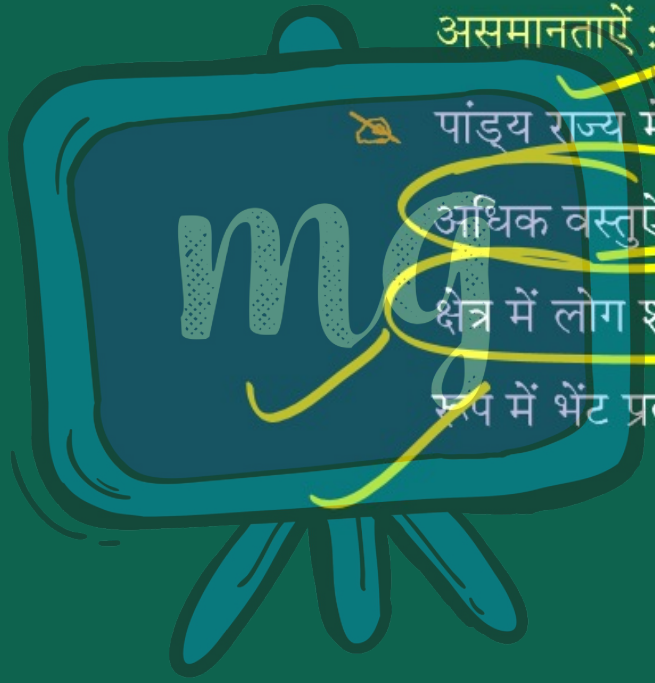

असमानताऐं :-

- पांड्य राज्य में सरदार को स्वेच्छापूर्वक अधिक से अधिक वस्तुऐं भेंट में प्रदान करते हैं। जबकि दंगुन क्षेत्र में लोग शासकीय अधिकारियों को दायित्व के रूप में भेंट प्रदान करते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

5. अभिलेखशास्त्रियों की कुछ समस्याओं की सूची बनाइये ?

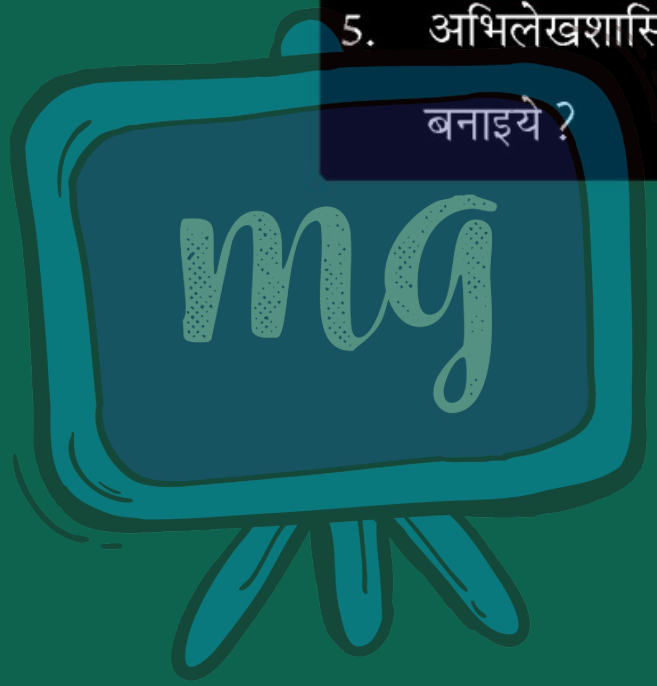

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : अभिलेखों से प्राप्त जानकारी की भी सीमा होती है–

1. कभी कभी इसकी तकनीकी सीमा होती है। अक्षरों को हल्के ढंग से उत्कीर्ण किया जाता है जिन्हें पढ़ पाना मुश्किल होता है।
2. अभिलेख नष्ट भी हो सकते है जिससे अक्षर लुप्त हो जाते हैं।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

3. अभिलेखों के शब्दों के वास्तविक अर्थ के बारे में पूर्ण रूप से ज्ञान हो पाना भी हमेशा आसान नहीं होता है। क्योंकि कुछ अर्थ किसी विशेष स्थान या समय से संबंधित होते हैं।
4. यद्यपि कई हजार अभिलेख प्राप्त हुए है लेकिन सभी के अर्थ नहीं निकाले जा सके हैं।
5. अनेक अभिलेख और भी रहे होंगे परन्तु कालांतर में वे सुरक्षित नहीं बचे हैं। इसलिए अभी जो अभिलेख उपलब्ध है। वे संभवतः कुल अभिलेखों के अंश मात्र है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

6. एक मौलिक समस्या यह भी है कि अभिलेख बड़े और विशेष अवसरों का ही उल्लेख करते हैं। यह जरूरी नहीं है कि जिन्हें हम आज राजनीतिक और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण मानते हैं उन्हें अभिलेखों में अंकित किया गया हो।

उदाहरण के लिए – खेती की दैनिक प्रक्रिया और रोजमर्रा के जिन्दगी के सुख दुख का उल्लेख इनमें नहीं है।